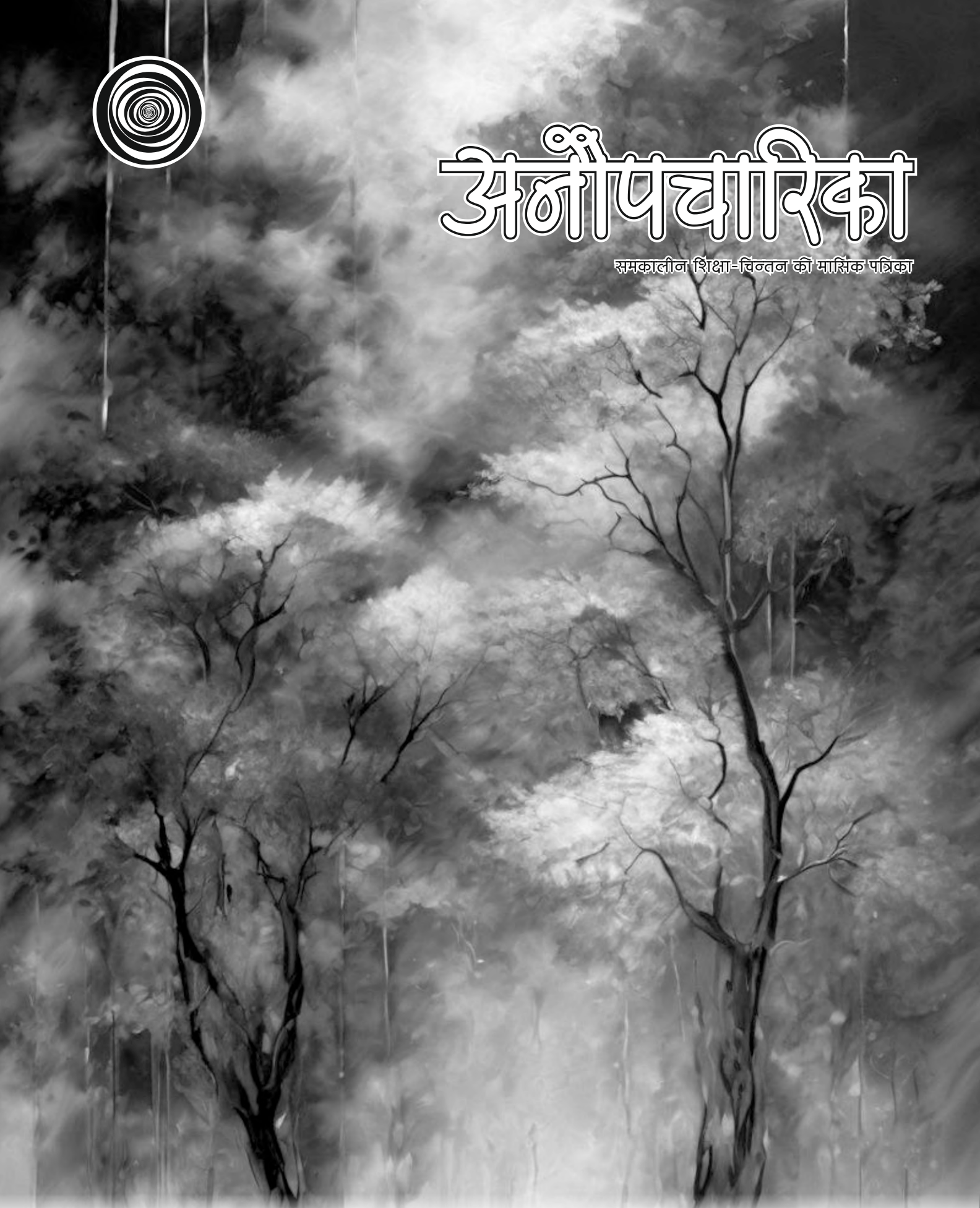

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 7 आषाढ़-श्रावण वि.सं. 2082 जुलाई, 2025 पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x

किशोर-किशोरियों के साथ पर्यावरण दिवस का उत्सव

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में विश्व पर्यावरण दिवस पर मनुष्य के भविष्य के लिए धरती को बचाने की बात स्कूली विद्यार्थियों के साथ की गई जिनमें किशोरियां अधिक थी।

समिति के उपवन में जामुन के पेड़ों के गुंबज जैसे झुरमुट के नीचे बैठ कर विद्वानों ने पेड़ों और पक्षियों की बातें कीं तथा प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में विद्यार्थियों को समझाया।

मुख्य वक्ता वनस्पति विशेषज्ञ देवेंद्र भारद्वाज तथा अन्य विद्वानों ने वार्ता के माहौल को स्कूली कक्षा जैसा नहीं होने दिया। सभी ने किशोर-किशोरियों से आपसी संवाद ही किया।

छात्र-छात्राओं तथा उनके साथ आई शिक्षिकाओं को समिति की तरफ से एक-एक पौधे का उपहार दिया गया।

ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा बीजों को उगा कर बनाए पौधे लेकर आए थे। उन पौधों को समिति उद्यान में रोपा गया।

आयोजन में समिति के सचिव हिमांशु व्यास के अलावा होम्योपैथी के जाने माने चिकित्सक डॉ. अशोक शर्मा तथा वनस्पति प्रेमी राजेंद्र सिंह ने भी अपने अनुभव साझा किए।

समिति के सहयोगी श्रीमती बटिना मलिक तथा दिलीप शर्मा द्वारा श्रीमती रमा भारद्वाज की मदद से संयोजित यह कार्यक्रम अनूठा रहा। ❑

गांधी, जिन्ना, आंबेडकर और आजादी किताब पर चर्चा

भारत की आज़ादी की कहानी के तीन प्रमुख पात्रों गांधी, जिन्ना और आंबेडकर को एक बार फिर नई दृष्टि से देखते हुए आई एक पत्रकार की पुस्तक पर राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में एक महत्वपूर्ण गोलमेज चर्चा हुई।

प्रतुल सिन्हा की किताब गांधी, जिन्ना, आंबेडकर और आजादी पर चर्चा में राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष सी. पी. जोशी, पूर्व मंत्री बी. डी. कल्ला तथा विधानसभा के सदस्य जोगेश्वर गर्ग भी शामिल थे। तीनों राजनेताओं ने लेखक के विस्तृत होमवर्क तथा उसकी बेबाकी की तारीफ की। चर्चा की दिलचस्प बात यह रही कि लगभग सभी वक्ता महात्मा गांधी पर अधिक केंद्रित रहे। हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति सनी सेबेस्टियन, शायर लोकेंद्र कुमार 'साहिल' तथा लेखक राघवेंद्र रावत ने भी पुस्तक और उसकी विषयवस्तु पर अपने विचार व्यक्त किये।

प्रतुल सिन्हा ने बताया कि उन्हें पुस्तक की सामग्री के संकलन में आठ साल लगे। गोलमेज संवाद का संचालन जनसंपर्क विभाग के पूर्व उच्च अधिकारी अरुण जोशी ने किया। ❑

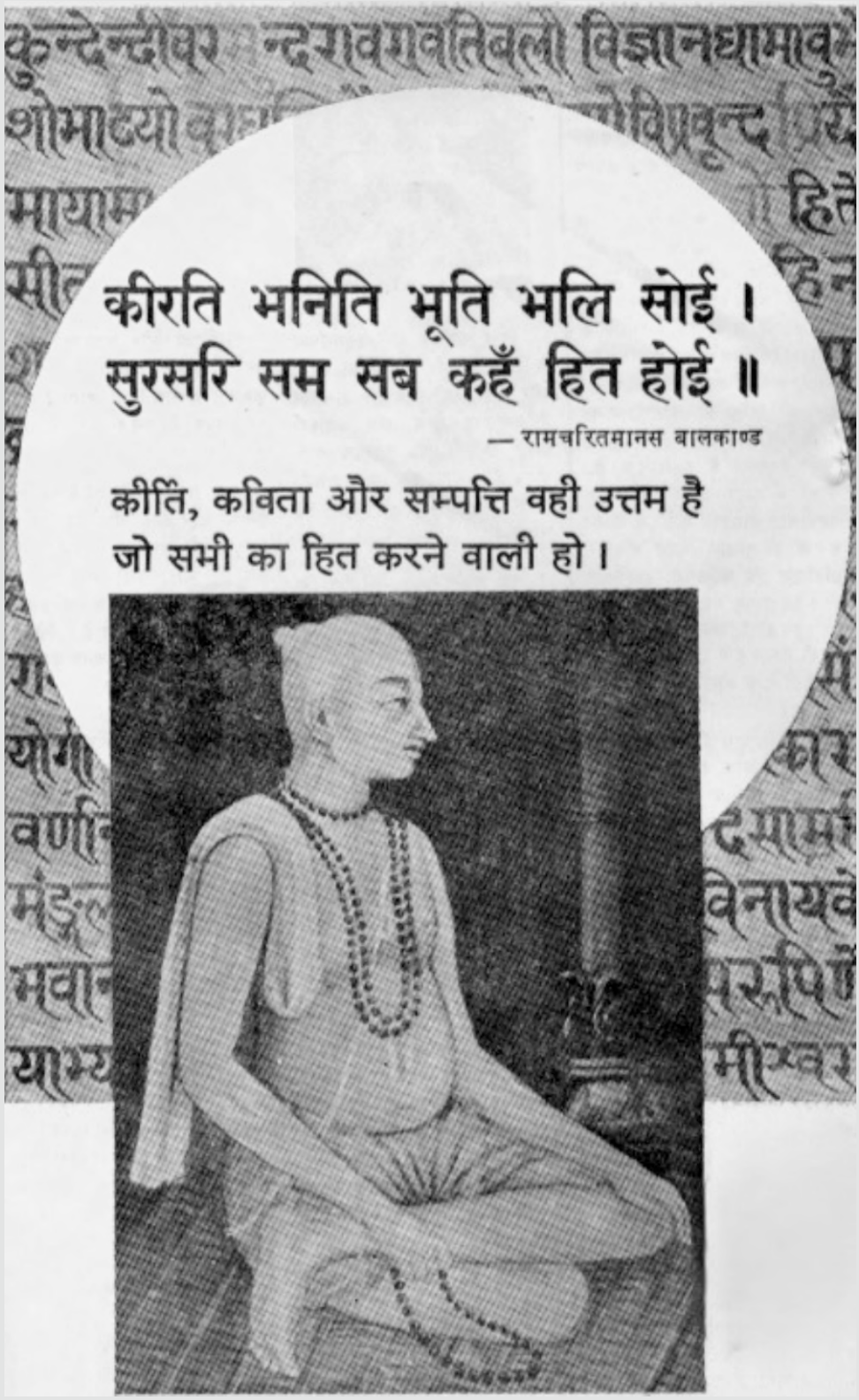
कीरति भनिति भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥
— रामचरितमानस बालकाण्ड
कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है
जो सभी का हित करने वाली हो ।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 7 आषाढ़-श्रावण वि.सं. 2082 जुलाई, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. रामचरित मानस-बालकांड

संपादकीय

5. वृत्ति और विवेक में समन्वय जरूरी

लेख

7. रचनात्मक शिक्षण अर्थात छात्रों को जानना सिखाएं! **– प्रो.पी.पी.शाह**

नज़रिया

9. कला का समुदायों से संबंध **– रघु गुल्लापल्ली**

विमर्श

11. सबके लिए प्रीस्कूल सपने को वास्तविकता बनाना है ! **– रक्मिणी बनर्जी**

निबंध

13. बदला लेने की भावना! **– जेम्स किमेली जूनियर**

लेख

14. ब्रह्मांड की उत्पत्ति का पता लगाने की वैज्ञानिको में अनोखी होड़ **– पल्लब घोष**

पुस्तक चर्चा

16. मानव कहलाने लायक चेतना **– रा.बो.**

विमर्श

18. जनसंचार माध्यम बन रहे हिन्दी भाषा के लिए संकट **– डॉ.कन्हैयालाल खांड़पकर**

20. बच्चों में अच्छे संस्कारों की बात अब रूढ़ि लगने लगी है **– सदाशिव श्रोत्रिय**

समस्या

22. कुछ युवाओं के लिये व्यस्कता की दहलीज लांघना आसान नहीं होता **– प्रीति प्रसाद, सत्यजीत मजूमदार**

लेख

24. 'त्सुंडोकू' : किताबों से घर सजाने की जापानी परंपरा **– जेमी राइडर**

स्मृति शेष

26. शोध के साथ रोमांच रचने वाला लेखक नहीं रहा

27. वाल्मीक थापर का निधन

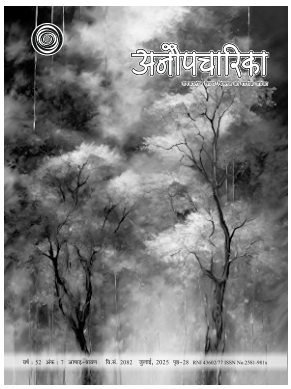

वर्षा ऋतु

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com
www.raea.in

संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

वृत्ति और विवेक में समन्वय जरूरी

मानव प्रजाति एक प्राचीन मस्तिष्क लिए हुए अतीत में, पूर्वाग्रहों, भ्रांतियों और भ्रमों में अटक गई है। क्या वह आधुनिक दुनिया की जटिलताओं को समझने में अक्षम है? इतिहास इसकी ताईद नहीं करता। आख़िरकार, मनुष्यों ने ही तो सभ्यताओं का निर्माण किया है, प्रकृति के नियम खोजे हैं रोगों को परास्त किया है और विवेकशीलता की पहचान की है। मानव प्रजाति स्वाभाविक रूप से विवेकहीन नहीं है। हालाँकि, हम अपने विवेकशील पक्ष का उतना उपयोग नहीं करते जितना हम कर सकते हैं।

हमारे मानस का सबसे कमजोर हिस्सा वह है जहां हम अपने विवेक या अपनी तर्कशक्ति की जगह अपनी वृत्ति पर अधिक भरोसा करते हैं। हमारी इसी भूल का लाभ बाजार की कंपनियां उठाती हैं। ये विराट कंपनियां पैसे के बल पर अपना वर्चस्व बनाती है। वे नीति निर्माताओं के सामने अपनी जोरदार पैरवी करती हैं। वे चुनावी धांधलियों में राजनैतिक पार्टियों की मदद करती हैं। वे राजनेताओं को गुपचुप धन पहुंचाती हैं। मगर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे हमारी सहज इच्छाओं को अपने हिसाब से उलट-पलट देती हैं ताकि हम उनका माल खरीद कर खुश हो जाएं। अपने को धन्य मानें। संगठित धर्म के ठेकेदार भी ऐसा ही करते हैं।

विवेक अथवा तर्क शक्ति मनुष्य को अन्य जीवों से अलग बनाने वाली प्रमुख विशेषता है। यह शक्ति उसे सोचने, समझने और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। परंतु जीवन के कई अवसरों पर हम तर्क की जगह अपनी वृत्ति या स्वाभाविक प्रवृत्ति - इंस्टिंक्ट - के आधार पर निर्णय लेने लगते हैं। यह वृत्तियां कभी जन्मजात होती हैं तो कभी सामाजिक कंडीशनिंग का परिणाम होती हैं। प्रश्न यह है कि क्या ऐसे अवसरों पर विवेक को त्याग कर वृत्ति का अनुसरण करना उचित है? यदि नहीं, तो हम वृत्ति-आधारित जीवनशैली को विवेकशील कैसे बना सकते हैं?

विवेक वह मानवीय शक्ति है जो विचार, अनुभव और ज्ञान के आधार पर किसी विषय पर, मनुष्य को तर्कपूर्ण निर्णय लेने को सक्षम बनाती है। यह समय, स्थान और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए क्या उचित है और क्या अनुचित का निर्णय करती है। दूसरी तरफ प्रवृत्ति स्वचालित रूप से किसी प्रतिक्रिया को जन्म देती है। यह जैविक, भावनात्मक या सामाजिक कंडीशनिंग से संचालित होती है। जैसे भय से भागना, क्रोध में चिल्लाना, या लालच में आना – ये सब वृत्ति की प्रतिक्रियाएं हैं।

सवाल उठता है कि विवेक की जगह वृत्ति का उपयोग कहां तक उचित है?
जब मनुष्य को तत्काल निर्णय लेना होता है और समय सोचने का नहीं होता, वहां वृत्ति

कारगर हो सकती है। जैसे कि किसी दुर्घटना में शरीर स्वतः पीछे हटता है, आग देखकर भागते हैं – ये वृत्ति ही जान बचाती है। ऐसे में विवेक की आवश्यकता नहीं होती। कुछ परिस्थितियों में मनुष्य की वृत्ति उसे खतरों से आगाह कर देती है। जैसे किसी अनजाने स्थान पर असुरक्षा की भावना या किसी व्यक्ति पर भरोसा न होना – यह वृत्ति कभी-कभी सतर्कता का संकेत भी देती है। भावनात्मक संबंधों में प्रेम, करुणा, ममता जैसी मानवीय भावनाएं वृत्तियों पर आधारित होती हैं। परिवार, मित्र या साथी के साथ संबंधों में केवल तर्क नहीं, बल्कि संवेदना की वृत्ति भी महत्व रखती है। लेकिन, यदि वृत्ति का उपयोग तर्क और विवेक के स्थान पर आदतन, अंधतः और बार-बार होने लगे, तो यह कई समस्याओं को जन्म देती है। वृत्ति के अत्यधिक प्रभाव के दुष्परिणाम आवेगपूर्ण निर्णय के रूप में सामने आते हैं। वृत्ति आधारित निर्णय तात्कालिक भावनाओं पर आधारित होते हैं – जैसे गुस्से में निर्णय लेना, डर के कारण अवसर छोड़ देना, या लालच में आकर गलत रास्ता चुनना। इससे दीर्घकालीन हानि हो सकती है।

वृत्ति से प्रभावित लोग जाति, धर्म, लिंग या वर्ग आधारित पूर्वग्रहों में उलझ जाते हैं। जैसे, औरत कमजोर होती है, गरीब आलसी होता है, युवाओं में समझ नहीं होती – ये सब सामाजिक वृत्तियों के उदाहरण हैं, जो विवेक के अभाव में पनपती हैं। जब व्यक्ति विवेक को त्याग कर केवल अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक या व्यक्तिगत वृत्तियों पर चलता है, तो समाज में असहिष्णुता और द्वेष बढ़ता है। इतिहास में धार्मिक संघर्षों, जातीय हिंसा और युद्धों के पीछे ऐसी ही वृत्तियां रही हैं।

वृत्ति-प्रधान जीवन व्यक्ति को आत्म-विश्लेषण और सुधार की प्रक्रिया से दूर करता है। वह जैसा है, वैसा ही बने रहना चाहता है। वह बदलाव से डरता है और गलतियों को दोहराता है।

वृत्तियों को बदला जा सकता है। इसके लिए सबसे पहला कदम है – अपनी वृत्तियों को पहचानना। कौन-सी वृत्ति मुझे बार-बार गुस्से में ला देती है? किस भावना में मैं विवेक खो बैठता हूँ? दिन के अंत में अपने व्यवहार और विचारों का अवलोकन करने लगें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हम किन वृत्तियों के अधीन हैं।

अच्छी शिक्षा व्यक्ति में विवेक जाग्रत करती है। दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास जैसे विषय हमें यह समझने में मदद करते हैं कि मानवीय प्रवृत्तियां कैसे कार्य करती हैं और उन्हें कैसे नियंत्रित किया जा सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता ईक्यू का विकास करके व्यक्ति अपने और दूसरों के भावों को समझ पाता है और नियंत्रित कर सकता है। यह वृत्ति को संयमित कर विवेक आधारित व्यवहार को प्रोत्साहित करता है।

भारतीय परंपरा में ध्यान, प्राणायाम और योग को चित्त की वृत्तियों को शांत करने का माध्यम माना गया है। विभिन्न प्रकार के लोगों, विचारों और जीवनशैली से मिलने से भी हमारी सीमित वृत्तियां टूटती हैं। हम सीखते हैं कि कोई एक विचार या प्रवृत्ति ही अंतिम सत्य नहीं होती। मानव मन की बेहतर अंतर्दृष्टि से हम उसे बदलना सीख सकते हैं तथा एक पूरी तरह उपयोग में नहीं आ रहे संसाधन को साध सकते हैं जो हमें 21वीं सदी और उससे आगे चुनौतियों से निपटने में मदद करेगा। ❑

रचनात्मक शिक्षण अर्थात छात्रों को जानना सिखाएं!

उच्च शिक्षा के सरकारी संस्थानों के जैसे हाल आज हैं, उसमें शिक्षण में रचनात्मकता की बात करना थोड़ा बेतुका लग सकता है। कोई भी शिक्षण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की बात नहीं कर रहा है। नई शिक्षा नीति भी नहीं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षण और परीक्षण में रचनात्मकता की अपेक्षा करता स्वर्गीय प्रो. शाह का बहुत पहले लिखा यह आलेख आज भी प्रासंगिक लगता है। ❑ सं.

❑

प्रो. पी. पी. शाह

❑

एक बहुत पुराना सवाल आज भी हमारे सामने मुंह बाये खड़ा है कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? क्या यह कुछ निश्चित चीजों को जानना भर है, या इसका काम नई चीजों का सृजन और आविष्कार करने में छात्र को सक्षम बनना है? यह सवाल स्वाभाविक ही उठता है कि यदि विषय-वस्तु को पढ़ाया नहीं जा सकता, तो विद्यार्थी इसे कैसे जान पाएगा? इसका उत्तर शिक्षाविद् देते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी को अपने लिए ज्ञान का पुनः सृजन करना होगा। ज्ञान का पुनः सृजन करने का क्या अर्थ है? एक सार्थक अर्थ में समझें तो सीखने के सिद्धांत और रणनीतियां प्रश्न को नए प्रश्नों में बदल लेने और अंततः ऐसे उत्तरों की ओर ले जाने के लिए छात्र को सक्षम बनाते हैं, जिन तक अन्य लोग ज्ञान की अपनी मूल खोज में पहले पहुंच चुके होते हैं। फिर भी प्रत्येक विद्यार्थी को उचित निर्देश और मार्गदर्शन में इन उत्तरों तक स्वयं पहुंचने की बात है। हमारा शिक्षण सीखने की इन रणनीतियों पर केंद्रित होना चाहिए।

मौजूदा समय की चुनौतीयां विविध क्षेत्रों में अत्यधिक उन्नत ज्ञान की मांग करती है। इसलिए हमारा शिक्षण पद्धति-उन्मुख होना चाहिए। किसी विषय को पढ़ाने के बजाय, हमें यह सिखाना चाहिए कि किसी विशेष विषय को कैसे सीखा जाए। दूसरे शब्दों में, हमारी शिक्षा को शिक्षण-उन्मुख की जगह सीखना-उन्मुख बनाना चाहिए। छात्रों को, जब वे स्कूल और कॉलेज में हों, तो विषय की सामग्री सीखने का नहीं, बल्कि यह सीखने का लक्ष्य होना चाहिए कि कैसे सीखें।

हमारी शिक्षा प्रणाली में जब कभी यह परिवर्तन होगा तब हमारी प्राथमिकताएं भिन्न होंगी तथा हमारे शैक्षिक मूल्य बदल जाएंगे। हमारे पास तब भी स्कूल और कॉलेज होंगे, लेकिन हम एक निश्चित पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों के एक निश्चित सेट तथा परीक्षाओं की एक निश्चित व्यवस्थान पर जोर देना बंद कर देंगे। हमारा जोर होगा विद्यार्थी की अपनी पहल पर। उसे अपने अध्ययन के क्षेत्र का स्वयं अन्वेषण करना सिखाया जाएगा। इस प्रकार वह अपनी पाठ्य पुस्तकों की तुलना में पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला को अधिक उपयोगी पाएगा। एक व्याख्यान की तुलना में एक चर्चा-सेमिनार उसके लिए अधिक उपयोगी साबित होगी। वर्तमान परीक्षाएं यह नहीं

परखतीं कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को क्या सिखाना चाहता है। नई व्यवस्था में शिक्षक को परीक्षणों के निर्माण में अधिक समय तथा प्रयास लगाना पड़ेगा जो न केवल विद्यार्थी की सीखने की रणनीतियों को लागू करने की क्षमता की वास्तविक परीक्षा होंगे बल्कि उसकी अपनी शिक्षण की रणनीतियों में सहायता करने वाले रचनात्मक प्रयास भी होंगे। इस नई व्यवस्था में अच्छे शिक्षक की छवि उसकी वर्तमान छवि से भिन्न होगी। वह अब ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसके पास व्याख्यान करने की क्षमता है, क्योंकि अक्सर शिक्षक में यह क्षमता विद्यार्थी की अभिव्यक्ति क्षमता को दबा देती है। वह ऐसा व्यक्ति भी नहीं होगा जो अपने विषय को अच्छी तरह जानता हो और निरंतर प्रवाह के साथ व्याख्यान देता हो, क्योंकि यद्यपि ऐसा शिक्षक विद्यार्थियों की प्रशंसा पाता है, मगर वास्तव में वह विद्यार्थियों को अपनी हीनता की भावना से दबाता है। सीखने पर आधारित शिक्षा में, एक शिक्षक की सफलता का मूल्यांकन इस बात से किया जाएगा कि वह विद्यार्थियों को किस हद तक वे रणनीतियां और योग्यताएं प्रदान कर पाता है, जिनके कारण शिक्षक का ज्ञान के क्षेत्र में प्रयास सफल हुआ है। उदाहरण के लिए, हम न केवल यह अपेक्षा करेंगे कि शिक्षक स्पष्टवक्ता हो, बल्कि यह भी कि वह अपने विद्यार्थियों को स्पष्टवक्ता बनाने में भी सक्षम हो। स्पष्टवक्ता की क्षमता सीखने की एक महत्वपूर्ण रणनीति है। असंगत अभिव्यक्ति असंगत सोच का संकेत होती है। हमें अपनी शैक्षिक प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में अभिव्यक्ति क्षमता को, सीखने की क्षमता के समान ही महत्व देना सीखना होगा। कमजोर अभिव्यक्ति न केवल सीखने को प्रभावित करती है, बल्कि अक्षमता संबंधी जटिलताओं को जन्म देकर विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को नुकसान पहुंचाती है। वास्तव में अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण सीखने की रणनीतियों और ज्ञान के अर्जन से हमेशा एक कदम आगे होना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति जो अवधारणा बना सकता है और जो व्यक्त कर सकता है, उसके बीच एक अंतर होता है। जब तक अभिव्यक्ति क्षमता सीखने की क्षमता से अधिक नहीं होती, तब तक विचारों के सुसंगत निर्माण में सहायता करने वाली अभिव्यक्ति की प्रक्रिया, जो बदले में आगे के विचारों की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप सुसंगत अभिव्यक्ति की और अधिक आवश्यक्ता होती है, कभी शुरू नहीं हो सकती।

इस प्रकार, विषय-वस्तु के शिक्षण पर जोर न दिए जाने से, विषय-वस्तु के बारे में जानकारी होना शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण गुण नहीं रह जाएगा, बल्कि अध्ययन के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुप्रयोगों द्वारा रणनीतियों पर रचनात्मक नियंत्रण, उसकी वरीयता में होगा। वर्तमान में, बहुत से मामलों में, विषय को अच्छी तरह से जानने का अर्थ, सभी उत्तरों को पहले से जानने से अधिक कुछ नहीं है। जो छात्र उत्तर नहीं जानते, वे स्वयं को हीन समझते हैं और ज्ञानवान शिक्षक के प्रति पूरी तरह से आदरभाव रखते हैं। इस तरह की स्थिति विधि-उन्मुख शिक्षण में सबसे अधिक अवांछनीय होगी। कुछ मामलों में शिक्षक शायद उत्तरों को पहले से जानने में असमर्थ होगा। यदि शिक्षक असाधारण रूप से प्रतिभाशाली है, जिसमें नकल और कल्पना के गुण शामिल हैं, तो वह उत्तरों को जानने के बावजूद सक्षम शिक्षण करने में सक्षम हो सकता है। रचनात्मक शिक्षण साहसिक शिक्षण होगा - ऐसा शिक्षण जिसमें शिक्षार्थी की सफलता शिक्षक की प्रतिष्ठा बचाने की चिंता से पहले होगी। रचनात्मक शिक्षण में, जो एक अच्छे शिक्षक की वास्तविक परीक्षा होगी है, शिक्षक एक ऐसी समस्या प्रस्तुत करके शुरू करेगा जिसका उसके पास स्वयं कोई पूर्व-परीक्षणित उत्तर नहीं है। इसके लिए समस्या को इस तरह से सूत्रबद्ध करने में बहुत अधिक सरलता की आवश्यकता होगी कि छात्रों के अपेक्षाकृत निम्न स्तर के परिष्कार पर भी, समस्या को उसी जिज्ञासा और उलझन के साथ पहचाना जाए जो शिक्षक उसके लिए लाता है। इसके अलावा, समस्या के निहितार्थों और शाखाओं के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करने, अन्यत्र इसके संबंधों और नतीजों के माध्यम से अंततः इसके समाधान के संभावित तरीकों तक पहुंचने में महान शिक्षण क्षमता की आवश्यकता होगी। इस सब के दौरान, शिक्षक के पास कोई पूर्वकल्पित उत्तर नहीं होता है: वह वास्तव में विद्यार्थियों पर काम करने के बजाय उनके साथ काम करेगा, वह भी उलझेगा, और कभी-कभी अप्रत्याशित घटनाओं से आश्चर्यचकित होगा। इस प्रकार शिक्षक और छात्र एक साथ मिलकर काम करते हैं। शिक्षक और शिष्य के बीच भाईचारे की भावना विकसित हुई है जिसका प्रभाव कक्षा की दीवारों को पार कर जाएगा।❑

कला का समुदायों से सम्बन्ध

❑

इंडिया इम्पैक्ट शेरपाज़ के सह-संस्थापक रघु सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में कला के विभिन्न माध्यमों की भूमिका पर काम कर रहे हैं। उनका यह आलेख हम इंडिया डेवलपमेंट रिव्यू (आईडीआर) से लेकर संपादित रूप में यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। ❑ सं.

पिछली कई सदियों से भारत के विविध समुदायों का कला के साथ गहरा संबंध रहा है। इसमें मौखिक परंपराएं, रंगमंच, संगीत, नृत्य और कविता जैसी कई कलाएं उल्लेखनीय हैं। ऐसी बहुत सी कलात्मक अभिव्यक्तियां देशभर में त्योहारों, सामुदायिक जमावड़ों और सांस्कृतिक उत्सवों का अभिन्न हिस्सा रही हैं। ये न केवल अपनी पहचान की अभिव्यक्ति का माध्यम हैं, बल्कि कहानी कहने का प्रभावशाली जरिया भी हैं।

कई उदाहरण यह दिखाते हैं कि कला केवल अहम सामाजिक मुद्दों के प्रचार-प्रसार का माध्यम नहीं है, बल्कि इसके जरिए निजी अनुभवों और सांस्कृतिक विरासत के आधार पर समुदायों से बेहतर रूप से जुड़ा जा सकता है। मौजूदा समय में भारत के कुछ सामाजिक उद्देश्य संगठन (एसपीओ) विभिन्न कलाओं से सामाजिक क्षेत्र के कई विषयों पर काम करने का प्रयास कर रहे हैं।

संवाद, सहयोग, धैर्य, कल्पनाशक्ति और तार्किकता को उभारने में कला बड़ी भूमिका निभा सकती है। इससे बच्चों को रचनात्मक और भावनात्मक रूप से फलने

❑

रघु गुल्लापल्ली